४० ○ I ②

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2019 24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
Hindi (General)	0 5 1	English

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

माध्यमिक शिक्षा ... मण्डल, भोपाल

अंकों में — परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	9	6	2	3	0	5	2	1

शब्दों में

Two	nine	six	two	three	Zero	five	two	one

नीचे दिए गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरण: | 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :—पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 01 शब्दों में एक one

ख :—परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 13

ग :—परीक्षा का दिनांक 09 | 03 | 2019

परीक्षा नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्ड्री परीक्षा **C.No.-622001**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर — शांति सुरोमन — [signature]

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर — [signature] विजय श्रीवास्तव केन्द्राध्यक्ष

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक ... Govt. ... V. No ... gong (Chh.)

परीक्षक ... O.I Govt. ... No. 1 Chhatarpur (M.P.) No 07128

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में

2 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 2 के अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 1]

उत्तर - 1 रिक्त - - - स्थान

उत्तर (i) ब्रज

उत्तर (ii) 1888

उत्तर (iii) रहीम

उत्तर (iv) नवीनतम

B

उत्तर (v) मौन्टेन

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 2]

सही विकल्प

उत्तर (i) (अ) दृढ़ता से जम जाना

उत्तर (ii) (अ) कारक सम्बन्धी

उत्तर (iii) (द) एकांकी

उत्तर (iv) (स) 8

उत्तर (v) (स) भूषण

③ [ ] + [ ] =

... पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => 3]

सत्य । असत्य

उत्तर(i) सत्य

उत्तर(ii) सत्य

उत्तर(iii) सत्य

उ... सत्य

...(v) सत्य

B
S
E

[प्रश्न क्रमांक => 4]

सही - जोड़ी

(i) हिमालय और हम	गोपाल सिंह नेपाली
(ii) मेरे सपनों का भारत	निबंध
(iii) आँचलिक कथाकार	फणीश्वरनाथ रेणु
(iv) हाथ कंगन को आरसी क्या	लोकोक्ति
(v) बल - बहादुरी	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

(4) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 5]

उत्तर (i) संवेदनाहरक का तकनीकी शब्द है Anaesthesia ।

उत्तर (ii) कनकलता का विग्रह होगा कनक के समान लता (कर्मधारय समास)

उत्तर (iii) अंचल में इक प्रत्यय जोड़ने से बनता है आंचलिक ।

उत्तर (iv) 'यशोधरा की व्यथा' कविता है ।

उत्तर (v) 'जागो फिर एक बार' कविता में ओज गुण है ।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 6]

उत्तर(6) नारायण वह जो जल में निवास करता है। अत्यधिक वर्षा होने के कारण लेखक का घर भी जलमग्न हो गया है। इन्हीं परिस्थितियों में लेखक ने स्वयं को नारायण कहा है।

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 7]
[और]

उत्तर(7) 'बल - बहादुरी' निबंध में अभय और शांति के सुंदर सम्मेलन को ही मानवता के विकास की पूर्ण भूमि कहा है।

[प्रश्न क्रमांक → 8]

उत्तर(8) द्विवेदी युगीन निबन्धों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

(i) इस युग में ज्ञान - विज्ञान से सम्बन्धित निबंध लिखे गए हैं।

(ii) निबंधों की भाषा व्याकरणात्मक रही एवं उसमें कसावट भी रही।

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक → 9]
[और] अथवा]

उत्तर (क) हिन्दी निबन्धों का विकास मुख्यत: चार चरणों में हुआ।

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग (1850 - 1900)

(ii) द्विवेदी युग (1900 - 1920)

(iii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल युग (1920 - 1940)

(iv) शुक्लोत्तर युग (1940 -- अब तक)

B
S
E

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 10]

उत्तर (10) समास ⇒ जब परस्पर संबंध रखने वाले शब्दों को मिलाकर उनके बीच में आई विभक्ति आदि का लोप करके एक पद बना दिया जाये तो उस प्रक्रिया को समास कहते हैं।

उदाहरण
राजपुत्र ⇒ राजा का पुत्र

7

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 7 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => 11]
[और]

उत्तर(1) भिन्नार्थक समोच्चारित शब्द => ऐसे शब्द जिनका उच्चारण लगभग एक समान होता है किन्तु अर्थ भिन्न - भिन्न होते हैं उन्हें समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। इन्हें 'ईषत् समरूपी' भी बोला जाता है।

उदाहरण => अंस => कंधा
अंश => भाग

[प्रश्न क्रमांक => 12]

i) मेरे को घर जाना है।
शुद्ध => मुझे घर जाना है।

ii) अमिताभ की ऊँचाई जया से अधिक है।
शुद्ध => अमिताभ की ऊँचाई जया की ऊँचाई से अधिक है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => 13]

तकनीकी शब्द

(i) अधिसूचना => Natification

(ii) पत्रकारिता => Journalism

(iii) कर => Tax

(iv) पोषण => ~~Nuti~~ Nutrition

[प्रश्न क्रमांक => 14]
[अथवा]

वाक्य परिवर्तन :-

(i) राजेश आस्तिक है ।

वाक्य => राजेश नास्तिक है ।

(ii) बालक रो-रो कर चुप हो गया।

वाक्य => बालक रोता रहा और चुप हो गया ।

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => 15]

[अथवा]

(i) गले का हार => अत्याधिक प्रिय

वाक्य => सोहन ने प्रिया को हमेशा गले का हार बनाकर रखा है।

(ii) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद => मूर्ख उच्च गुणों को नहीं जानता।

वाक्य => मोहन ने लड़ाई करकर यह सिद्ध कर दी दिया की बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

[प्रश्न क्रमांक => 16]

उत्तर => 16 रहीम विलास नामक कविता में कवि रहीम ने सच्चा मित्र उसे कहा है जो संकट के समय भी मित्र के साथ खड़ा रहा। जो विपरीत परिस्थितियों में मित्र का साथ दे उसे सही रास्ता बताए तथा सुख - दुख में समान रहे। कवि रहीम ने उसे ही

प्रश्न क्र.

सच्चा मित्र बताया है। रहीम के अनुसार ऐसे मित्र ही मित्रता की कसौटी पर खरा उतरते है।

[प्रश्न क्रमांक => 17]
[अथवा]

उत्तर => 17 सिंहनी की गोद से जब कोई उसके बच्चे को छिनता है तो वह इतनी जोर से दहाड़ती है कि उसके शिशु को उठाने वाले हाथ पीछे हो जाते हैं। पर मेषमाता अपने शिशु को उठाने वाले को चुपचाप देखती रहती है वह कमजोर है। इसलिए अपने जन्म पर अपलक आँसू बहाती है।

B
S
E

[प्रश्न क्रमांक => 18]

उत्तर => 18 गोपाल सिंह नेपाली जी ने हिमालय से हमारे तीन संबंध कुछ इस प्रकार बताए हैं।

प्रश्न क्र.

(i) हिमालय पर जिस प्रकार प्रभात और संध्या की लालीमा समान रहती है। उसी प्रकार भारतीय भी सुख - दुःख को समान भाव से ग्रहण करते हैं।

i) हिमालय पर्वत अडिग और अविचल है। उसी प्रकार भारतीय भी अडिग - और शाश्वत है।

(iii) हिमालय पर्वत अमर है उसी प्रकार भारतीय भी अमर हैं शाश्वत हैं।

B
S
E

[प्रश्न क्रमांक → 19]
[अथवा]

उत्तर⇒19) बल की दृष्टि से पश्चिम और भारत में पर्याप्त अंतर है। पश्चिम शारीरिक बल का उपासक है और भारत आत्मबल का। अर्थात भारत बुद्धि के बल का उपासक है। अपने-अपने समय और परिस्थितियों में दोनों बल खूब फले - फूले और अपनी चरम सीमा तक पहुँचे। 'आत्म - बल और शारीरिक बल में से आत्म - बल को अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

(12) [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 12 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक → २०]
[अथवा]

उत्तर २०) 'तीन बच्चे' नामक कहानी में तीन बच्चों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। उन्होंने चिथड़े पहन रखी थी। उन्होंने फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे कई दिनों से ना नाहने के कारण उनके शरीर पर मैल की परतें जमी थी वे भूखे व असहाय थे और जेल के पास नाले पर बने पुल पर रहते थे और भीक मॉगकर गुजारा करते थे।
लेखिका को सबसे छोटे लड़के प्रेमा पर दया आ गई क्योंकि वह उनमें सबसे छोटा था। मुश्किल से पॉच बरस का होगा उसके गाल पर आँसुओं के मोटे-मोटे निशान थे जिससे उस स्थान का मैल भी धुलकर अब साफ हो गया था। छोटे लड़के की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी।

B
S
E

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => २१]

उत्तर => २१ ~~यहाँ से कई सौ~~

उत्तर => २१ चेन्नई में हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी का बहुत अधिक प्रचार कर रही है यहाँ से कई सौ अध्यापक - अध्यापिकाएँ प्रतिवर्ष शिक्षा ग्रहण कर दक्षिण में हिन्दी का प्रचार कर रहे है। जब महात्माजी ने कि चेन्नई में हिन्दी-प्रचार की नींव रखी तब यहाँ के हिन्दी प्रेमी जन ऋषीकेशवजी और रघुवरदयालजी यहाँ पर पहुँचे और जब से ही हिन्दी को राष्ट्र भाषा ~~ब~~ मानकर कार्य कर रहे हैं।

[प्रश्न क्रमांक => २२]

उत्तर => २२ शिवाजी जब चतुरंगिनी सेना (घोड़े पैदल आदि) के साथ ~~थे~~ सुसज्जित होकर जाते हैं। तो भयंकर धोल उड़ने लगती है। शिवाजी जब युद्ध में विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से निकलते हैं तब संसार की गली - गली में हलचल मच जाती है। हाथियों के परस्पर

प्रश्न क्र.

टकराकर चलने से सेनों की कनपटीयों में से अत्यधिक मद बहने लगता है। जो नदी का रूप धारण कर लेता है। सेना में उत्साह उत्पन्न करने वाले नागाड़ों का शोर सीमाहीन होने लगता है। अत्यधिक भीड़ - भाड़ के कारण सुर्य भी तारे के समान देख रहा है। हाथियों के परस्पर टकराकर चलने से समुद्र का जल भी थाली में रखे पारे के समान हिल रहा है।

B
S
E

[प्रश्न क्रमांक => २३]

उत्तर => २३ जब बिजली चली गई तब लेखक बाबू गुलाबराय को तरह - तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उसके घर में दिया - सलाई ~~थी~~ नहीं थी। उस समय दिया-सलाई का मिल जाना ~~अरु~~ ज्योतिस्वरूप परमात्मा के मिलने जैसा था। लालटेन भी शून्य निकली क्योंकि उसमें तेल नहीं था। घर में एक टूटी - फूटी टॉर्च थी लेकिन उसे खोजने

de'Smat

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 15 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

के लिए भी टॉर्च की आवश्यकता थी जो सन्दल ~~खिसने~~ घिसने के भांति कम सिरदर्द न था। कहीं से लेखक का नौकर टॉर्च लाता है और सभी को शान्ति का अनुभव होता है।

BSE

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => २५]

संदेसौ - - - - - - - - - - - - - - रोटी भावै ॥

संदर्भ => प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक मकरंद के 'सूर के बालकृष्ण' नामक पाठ श्री से ली गई हैं। इसके कवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग => प्रस्तुत पंक्तियों में यशोदा के द्वारा देवकी को भेजे संदेश का सुंदर चित्रण हुआ है।

व्याख्या => यशोदा राहगिर उद्धव के माध्यम से देवकी से कहती है कि मैं तो तुम्हारे पुत्र का पालन-पोषण करने वाली धाय हूँ। मैं चाहती हूँ कि तुम अपनी महिमा मुझ पर सदा बनाये रखना। वैसे तो तुम कृष्ण को भली प्रकार जानती हो। लेकिन मुझसे कहे बिना नहीं रहा जाता। सुबह होकर मेरे लाडले मोहन को माखन रोटी खाना खास पसंद है। तो तुम उसकी प्रिय वस्तुएँ उसे देती रहना।

B
S
E

17

योग पूर्व पृ० + पृष्ठ = कुल अंक

मध्यप्रदेश

EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

विशेष => (i) ब्रज भाषा है ।
(ii) अनुप्रास अलंकार है ।
(iii) तत्सम शब्दावली है ।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 18 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => 25]

उत्तर (i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है
" देश के विकास की प्रबल भावना" ।

उत्तर-(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश है कि
हमारे देश में विभिन्न जाति व
धर्म के लोग हैं परन्तु सभी प्रेम व
भाईचारे से रहते हैं। राष्ट्र भाषा
हिन्दी होने पर सभी प्रादेशिक
भाषाओं का विकास संस्कृत से
हुआ है।

B S E

उत्तर-(iii) मेरे सपनों के भारत में सब लोगों
के साथ समानता के व्यवहार की
अपेक्षा की गई है।

उत्तर-(iv) उन्नति शब्द का पर्यायवाची है
प्रगति, विकास

उत्तर (v) ईंट से ईंट बजा देना का अर्थ है
नष्ट कर देना।

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 1 अंक	=	कुल अंक

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक => 26]

उत्तर (i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है " ~~विषम~~ अनेकता में एकता" ।

उत्तर (ii) उपर्युक्त पद्यांश का सारांश है कि भिन्न - भिन्न जाति, धर्म, भाषा होने पर भी हम सभी 'एक' हैं। हमारी एकता से ही देश की एकता जोड़ी है तथा मिल - जुलकर प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

उत्तर (iii) समाज से टूटने पर मनुष्य के विचारों में मैलापन आ जाता है।

उत्तर (iv) आस्था शब्द का विलोम है अनास्था।

उत्तर (v) हम मिल - जुलकर कठिन से कठिन रास्तों को सरल बना सकते है हम मिल - जुलकर कृति - आकृति संस्कृति भाषा आदि सभी रास्तों को सरल बना सकते हैं।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 20 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 27]

सेवा में,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
सेन्ट एस. आर. उ. मा. विद्यालय
गंज बासौदा [म.प्र.]

विषय ⇒ बुक बैंक से पुस्तक प्राप्त करने हेतु ।

महोदय,

सविनय विनम्र निवेदन है कि मैं आपके ~~विद्यालय~~ विद्यालय की कक्षा - बारहवी की छात्रा हूँ । मैं आपके विद्यालय की एक उत्कृष्ट छात्रा हूँ और हमेशा प्रथम श्रेणी में ~~अत्य~~ उत्तीर्ण हुई हूँ । मैं आपको बताना चाहती हूँ कि मेरे पिताजी एक निर्धन मजदूर हैं । उनकी आय बहुत कम है । मेरे तीन और भाई - बहन हैं पिताजी हमारी पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ हैं ।

अतः श्रीमान जी से विनम्र प्रार्थना है कि आप मुझे शीघ्र से शीघ्र बुक बैंक से पुस्तकें दिलाने की कृपा करें । ताकि मैं अपना अध्ययन कार्य जारी रख सकें । मैं सदा आपकी आभारी रहूँगी ।

धन्यवाद

BSE

21

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 21 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

दिनांक → 09 मार्च 2019

आपकी आज्ञाकारी
शिष्या
नाम :- अ ब स
कक्षा :- बारहवी ।

B
S
E

(22)

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

[प्रश्न क्रमांक ⇒ 28]

खण्ड (ब)

रूपरेखा

(ii) " विज्ञान और मानव जीवन"

रूपरेखा

(1) प्रस्तावना
(2) विज्ञान के विभिन्न साधन
(3) विज्ञान विभिन्न क्षेत्र मे उपयोगी
(4) विज्ञान एक वरदान
(5) विज्ञान और मानव
(6) विज्ञान के दुरुपयोग से उत्पन्न समस्याएँ
(7) उपसंहार

" विज्ञान मिला तुम्हें एक वरदान है मानव "

" विज्ञान विश्व को आज एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर रहा है" - 'आइंस्टाइन'

प्रश्न क्र.

खण्ड (अ) निबंध

(ii) भारतीय समाज में नारी का स्थान

रूपरेखा

(i) प्रस्तावना
(ii) प्राचीन काल में नारी की स्थिति
(iii) मध्य काल में नारी की स्थिति
(iv) नारी चेतना
(v) वर्तमान मे नारी की स्थिति
(vi) उपसंहार

B
S
E

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते तत्र रमन्ते देवता: ।"

(i) प्रस्तावना => ब्रह्मा के पश्चात इस भूतल पर मानव को अवतरित करने वाली नारी का स्थान सर्वोपरि है। वह ही माँ बहिन पत्नी आदि रूपों मे समाज से मानव का संबंध स्थापित करने वाली है। नारी अपने विभिन्न रूपों में देवी के समान ही है। जो मनुष्य को समाज से जोड़ती है। किन्तु हमारे समाज में नारी को वह सम्मान नहीं मिलता जिसकी वह अपेक्षित है।

प्रश्न क्र.

(ii) प्राचीन काल में नारी का स्थान :- प्राचीन काल में नारी की स्थिति अच्छी थी। नारी का सम्मान-जनक स्थान था। रोमाशाक, लोपामुद्रा आदि नारियों ने ऋग्वेद के सुक्तों को रचा। तो कैकयी और मंदोदरी के योगदानों को भी भोला नहीं जा सकता। सीता अनुसूया आदि को आज भी आदर्श माना जाता है। इस काल में नारी वंदनीय रही है।

"जब है नारी में शक्ति सारी तो फिर क्यों कहे नारी को बेचारी"

(iii) मध्यकाल में नारी की स्थिति => मध्यकाल नारि के लिए अभिशाप बनकर आया। मुगलों के आक्रमणों के फलस्वरूप नारी की करुण कहानी का प्रारंभ हुआ। वह घर की जंजीरों में बंद होकर रह गई। मुगल शासकों ने उसे भोग की वस्तु माना। पुरुष पर आश्रित होकर वह अबला बन गई थी। भक्तिकाल में भी उसे समुचित सम्मान नहीं मिला। तुलसी ने सीता, राधा आदि के आदर्श रूपों को सम्मान न देते हुए। नारी को भस्म करने वाली और पतन

वर्ष-2019

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
Hindi (general)	0 5 1	English	09 03 2019

स्टीकर तीर के निशान से मिला कर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

अंकों में: - 2 9 6 2 3 0 5 2 1

शब्दों में: - Two nine six two three zero five

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्ड्री परीक्षा

पर्यवेक्षक के नाम एवं हस्ताक्षर: हरीसिंह चौहान

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

विजय श्रीवास्तव
केन्द्राध्यक्ष

मुख्य उत्तर ... पृष्ठ क्रमांक ... तक कुल प्राप्तांक

की ओर ले जाने वाली कला।
यह काल नारी के लिए अभिशाप
सिद्ध हुआ है।

(iv) नारी चेतना => यह काल नारी चेतना
और नारी उद्धार का काल था।
~~भा~~ राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद
सरस्वती आदि ने नारियों को गरिमामय
स्थान दिलाने के सफल प्रयास किए
कई स्वयं सेवी संगठनों ने नारियों
को आगे बढ़ाने के सफल एवं
उन्नत कार्य किए। नारियों को आगे
बढ़ने स्वयं के लिए लड़ने आदि
के लिए प्रोत्साहित किया जाने
लगा।

पृष्ठ के अंकों का योग

2

सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में :-
मुक्त करो नारी को मानव चिर वंदनी
नारी को युग-युग की निर्मम कारा
से जननी सखी प्यारी को।

(v) वर्तमान में नारी की स्थिति ⇒ समाज के विकास में महती भूमिका अदा करने वाली नारी को इस पुरुष प्रधान समाज में आज भी वह सम्मान नहीं मिल पा रहा है जिसकी वह हकदार है। स्वतंत्रता के बाद नारी की सांवैधानिक स्थिति में काफी बदलाव हुए है। पिता के साथ अब माता का नाम लिखा जाने लगा है। नारी आज अपने गौरव को प्राप्त कर रही है। आज नारी घर से निकल कर विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करके पुरुष के साथ कंधा मिलाकर खड़ी है।

'नारी हूँ मैं दुर्गा हूँ बेचारी नहीं'

(vi) उपसंहार ⇒ " बदलाव की इस लहर में मानव तुमने भी मेरी शक्ति को जान ही लिया"
- बाबू गांगिया

नारी की पूर्व में दलितों जैसी स्थिति और उसके साथ हुए हिंसक व्यवहार के लिए हमारे समाज में

3

प्रश्न क्र.

बदलाव तो देखने मिले हैं। परन्तु आज भी कई बदलावों की आवश्यकता है। पुरुष को अपनी मानसिकता बदलकर नारी को बेचारी नहीं समझना होगा।

"मानवता की प्रतिमूर्ति तू भव्य - भाव भोषण भंडार दया क्षमा ममता की आकार विश्व - प्रेम की है आधार"। -

सुभद्रा कुमारी चौहान